Digitized by eGangotri

कितना सुन्दर देश हमारा

Kitana Sundar dash hamar

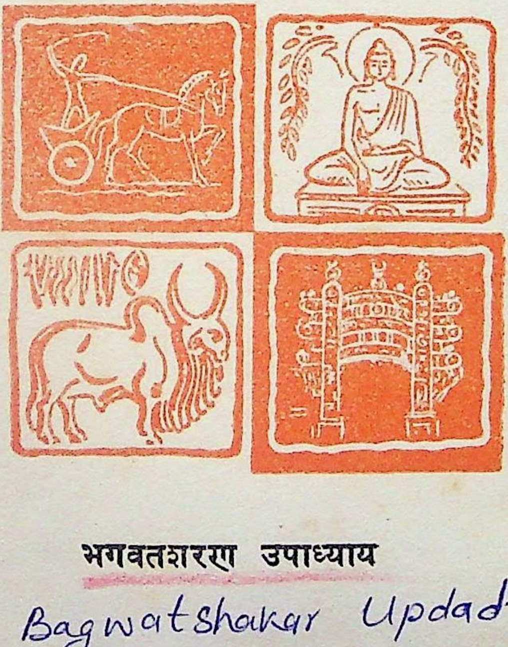

भगवतशरण उपाध्याय

Bagwatshakar Updady

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Rajpal and Sons Delhi

Digitized by eGangotri

19730
Rs 1.25
05.1.1958
180

मूल्य
सवा रुपया

प्रथम संस्करण
दिसम्बर, १९५६
1956

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
दिल्ली–६.

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कितना सुन्दर देश हमारा

•

कितना सुन्दर है हमारा यह देश, यह भारत ! जैसे आसमान में चांद-सूरज हैं अनगिनत झिलमिलाते तारों में न्यारे, वैसे ही पिरथी पर हमारा यह देश है, तीनों लोकों में न्यारा। प्रकृति ने इसे अपने हाथों संवारा है, और जैसे मां सुन्दर बेटे को जनकर अघा जाती है, प्रकृति भी इसे संवारकर निहाल हो गई।

तीन ओर लहराता समुन्दर, पूरब, पच्छिम, दक्खिन, संख, सीपी और मोती बिखेरता, उत्तर में गिरिराज हिमालय। नीले आकाश के नीचे नीले समुन्दर, जिनका कहीं ओर न छोर, अनन्त भगवान्।

नीचे नील समुन्द्र मनोहर ऊपर नील गगन है,
घन पर बैठ बीच में विचरूं यही चाहता मन है !

इसी से तो देवता भी गाते हैं कि धन्य है यह भारत भूमि, धन्य है यह देश, स्वर्ग से भी सुन्दर ! धन्य हैं वहां जनमने वाले मनुज, कि जनमें तो उसी भारत में !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और इसी भारत की सोने की जमीन पर सैकड़ों-सैकड़ों तरह के आदमी बसे हैं—काले, गोरे, गेहुएं, ऊंचे, नाटे, मझोले। आदमी जो यहां के थे, जो बाहर से आये। पर जो

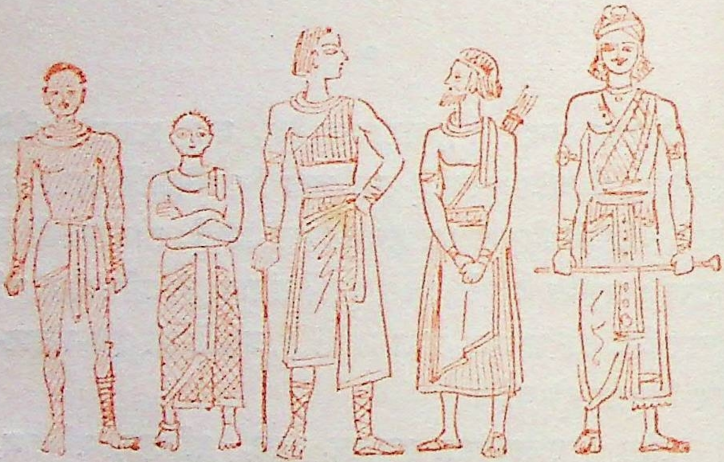

आये वे यहीं रम गये। जिसने इसकी मिट्टी का स्वाद जाना वह फिर कहां जा सकता था ? बड़े पुण्यों के फल से यह जमीन उसकी परस में आई थी, इसी की मिट्टी में वह खेला, इसी में मरकर वह घुलमिल गया।

सोना उगलने वाली मिट्टी, काली, भूरी, पीली, नदियों के दूध से धोई। एक टूक जमीन, छाती पर करोड़ों-करोड़ों प्रानी लिये। प्रानी जो एक दूसरे से शक्ल में, बनावट में भिन्न, भोजन-पहनावे में भिन्न, व्यवहार में भिन्न। पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक प्रान । इस एक टूक भूमि पर बसने वाले करोड़ों नर-नारी, पर अपनी ज़मीन के यक्सां प्यारे, एक मन, एक प्रान ।

लोगों की जबान भिन्न, रहन-सहन भिन्न, तौर-तरीके भिन्न, पर उनका आसमान एक, जमीन एक, हवा-पानी एक । उनका राज एक, राजनीति एक, समाज एक । सूरज समान रूप से उन पर अपना सोना बिखेरता है, चांद अपनी चांदी । मेघ अपना अमृत बरसाता है, बयार यक्सां उन्हें परसती है । चमकते दिन अंधेरी रातें उनके देश की परि-करमा करती हैं, सुनहरे सुबह और रेशमी सांझें अपने ताने-बाने से उस देश का मनोहर पट बुनती हैं । वह देश अपना, एक टूक भारत, जगत से न्यारा ।

यह हिमालय है, गिरिराज । परबतों का यह राजा पच्छिम से पूरब चला गया है, डेढ़ हजार मील लम्बा, ढाई सौ मील चौड़ा । समुन्दर से समुन्दर तक फैला । चोटियां इसकी आसमान चूमती हैं, बादलों में खो जाती हैं । धुएं-से उठते बादल इसकी चोटियों के चारों ओर मंडराते रहते हैं, उनकी तगड़ी बने । अनगिनत चोटियां, उसके अटूट सिलसिले के पहरुओं की तरह देश की रक्षा के लिये, जैसे चारों ओर झांकती रहती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिमालय से परे दूसरी दुनिया है। आंधी-पानी की दुनिया, बर्फ़ानी दुनिया, जहां बर्फ़ की आंधी चलती है, सर्द तीखी हवा कि हड्डी कांप उठे। उसी बर्फ़ को, उसी बर्फ़ानी आंधी को, उसी सर्द तीखी हवा को हिमालय हमारे लिए झेलता है, उन्हें अपने सीने पर झेल उनसे हमारी रक्षा करता है। और जो कहीं हिमालय न होता, एक दिन था जब हिमालय नहीं था, वहां समुन्दर लहराता था। तब हम भी न होते, पानी भर लाने वाली तब हमारी नदियां भी न होतीं, हमारी गंगा-जमुना न होतीं, हमारे हरे-भरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खेत न होते गांव न होते। होती बस बर्फ़ से ढकी ज़मीन, उस पर चलने वाली चुटीली आंधी, फैला बियाबां होता। न पेड़ होते न पंछी, न आम न कोयल, न पौधे न फूल, न तितली न भौंरे!

संसार के महाकवि कालिदास ने इस परबत-राज हिमालय की महिमा गाई है। हमारे लिये वह परबत नहीं है जिसकी अस्सी चोटियां संसार के सबसे ऊंचे पहाड़ों से ऊंची हैं। ना, नहीं है वह हमारे लिए पत्थरों का ढेर, रूखा पहाड़। मनुज है वह भी हमारे ही जैसा इन्सान। और इन्सान करके ही हमने उसे अपनी ज़िन्दगी में जाना है। हमारे वेद-पुरान, हमारी गीत-कहानियां इसके बखान से भरे हैं।

ना, वह पाहन नहीं है, आदमी है। कालिदास ने तो कविताओं की एक समूची किताब ही उस पर लिख डाली कुमारसंभव, जिसमें उन्होंने उसकी इन्सानियत के दरशन किए। हिमालय गृहस्थ है; बीवी-बच्चे वाला गृहस्थ। मेना उसकी पत्नी है, पार्वती उसकी बेटी; शंकर उसके दामाद हैं। ख़ासा-प्यारा कुनबा है यह उसका। उसी के बेटे-दामाद पार्वती और शिव तो हमारे ब्याह के गीतों में गाए जाते हैं। शिव की तरह वर और पार्वती की तरह बहू ही तो हमारी माताएं, हमारी बहनें मांगती हैं। और यह हमारी बुरा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इयों को डकार जाने वाला, भांग-धतूरा खाने वाला नील-कंठ, विष खाकर अमृत देने वाला औघड़ दानी भोलानाथ वहीं तो रहता है, हिमालय के कैलास में ।

देवताओं का निवास है हिमालय । देव, गन्धर्व, विद्याधर, किन्नर जितनी भी आदमी से ऊपर के जीवों की इन्सान ने कल्पना की उनका घर उसने हिमालय की ऊंचाइयों पर ही माना । वहीं, उसी की चोटियों पर वे रहते हैं। देवताओं का स्वर्ग वहीं है, सोने का सुमेरू पर्वत वहीं है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

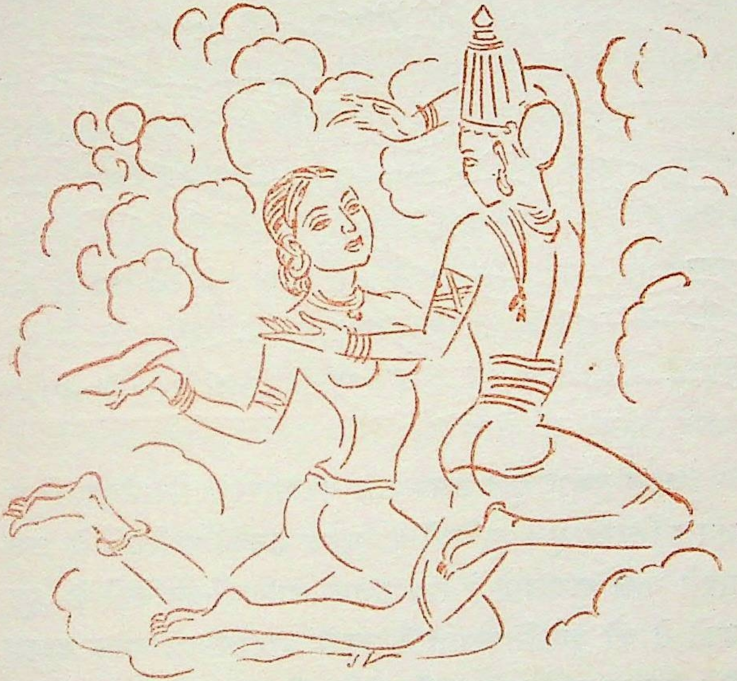

यक्षों की अलका वहीं है, शिव का कैलास वहीं है, गन्धमादन वहीं है; मानसरोवर वहीं है। वहीं कश्मीर की चोटी पर, कराकोरम की हिमाचली परबतमाला में अमरनाथ हैं, शिवलिंग-सी ही बर्फ़-राशि, जो कभी पिघलती नहीं, शिव-सी ही अमर है। बद्रीनाथ, केदारनाथ भी उसी हिमालय पर हैं, ऋषिकेश, हरद्वार; सब।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चार हजार फुट ऊपर उस परबतराज पर देवदारों के जंगल मिलते हैं। हाथियों के झुण्ड उनकी डालियों से जब अपने गाल खुजलाते हैं तब उनकी डालियों-टहनियों के टूट जाने से जो दूध निकलता है उससे सारा जंगल गमक उठता है। हिमालय के आँचल में चीतल हिरन चरते हैं, कस्तूरी वाले हिरनों के बैठ जाने से चट्टानें गमकने लगती हैं। ऊपर तिब्बत की राह में चंवरी गायें अपनी बालदार पूँछों का चंवर हिलाती डोलती हैं। इन्हीं की पूंछों के बालों के राजाओं को झूलने के लिये चंवर बनते हैं।

अब जरा इस हिमालय के सिलसिले के साथ-साथ पच्छिम से पूरब की ओर चलें। कश्मीर का मस्तक करा-कोरम की ऊंची चोटियों से ढका है, हिमालय का पच्छिम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाग है। उसके भी पच्छिम वह हिन्दूकुश है जो कभी भारत की पच्छिमी-उत्तरी सीमा था, जिसके कोट के पहरुए आने वाले दुश्मनों से मोर्चा लेते थे। कराकोरम के पार उत्तर पामीरों की पठार है, पहाड़ों की एक गांठ, जहां से पहाड़ों के कई सिलसिले कई ओर चले जाते हैं। पामीरों को दुनिया की छत कहते हैं। है भी वह दुनिया की पोख्ता पहाड़ी छत, सदा बर्फ़ से ढकी। उसके आंचल से आमू दरिया उत्तर-पच्छिम की ओर उतर जाती है और मैदानों में उतरकर वह खुशनुमा घाटी सिरजती है, जहां केसर फूलती है और जहां संसार की अनेक जातियों ने सभ्यता की बेलें लगाईं-आर्यों ने, यूनानियों ने, शकों ने, ईरानियों ने। वहीं बदख्शां है, फ़रगना, जहां तैमूर ने अपना साम्राज्य खड़ा किया था और जहां अनेक लड़ाइयां जीत-हार कर बाबर ने हिन्दुकुश लांघ काबुल और भारत में पीछे अपना राज खड़ा किया था।

पर वह तो हिमालय के परे की बात है। कराकोरम के इधर तो सिन्धु नदी है जो कश्मीर के जूड़े पर माला की तरह पड़ी पंजाब (अब पाकिस्तान) के मैदानों में उतर जाती है। सिन्धु जिसकी धारा ने ताकत और दिलेरी के अनगिनत कारनामे देखे हैं, जिसके तट पर वीरों ने अपनी वीरता और साहस से कीरत के कोट खड़े किये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अब पूरब उतर चलिये जिधर हिमालय की धवल माला भारत के मस्तक कश्मीर से उतर उसकी फैलाई भुजा के ऊपर बंगाल की ओर चली गई है। आगे हिमालय की वह ऊंची भूमि है जहां से पंजाब की पांचों नदियां, पांचों धारायें अपना पानी पाती हैं। झेलम, चिनाब, रावी, व्यास सतलज। सिन्ध भी। उनके निकास वहीं हैं और वहीं से ब्रह्मपुत्र भी निकलकर तिब्बत के भीतर से होता भारत के उत्तर-पूरब की सरहद बनाता आसाम के पहाड़ों की राह उसके मैदानों में उतर आता है। जमुना और गंगा भी हिमालय की बर्फ़-राशि जमनोत्री और गंगोत्री से निकलती हैं फिर अपनी पतली धारा से बहती मैदानों में उतरकर समुन्दर का रूप धारन कर लेती हैं। देश को हरा-भरा तो कर ही देती हैं, पर जब चाहती हैं परलय भी मचा देती हैं।

कैलास की छाया में मानसरोवर है, मीठे जल का झील। चाहे उसमें सोने के कमल न खिलते हों पर हमारी परम्परा ने तो उसके जल को कमलों के बन से ढका माना है। कवि कहता है कि बरसात के शुरू में कमल की डंडी तोड़ उसे राह का अपना कलेवा बना राजहंस उसी मान-सरोवर को उड़ जाते हैं। और उसके तीर पर तिब्बत की सीमा में जो कैलास की बर्फ़ीली चोटी है ,उसकी परिकरमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमारे तीर्थ-जात्री हर साल करते हैं। कालिदास कहते हैं कि बर्फ़ का यह पहाड़ शिव का अट्टहास है। गोरे शिव जब गोरी हंसी हंसते हैं, तब वह नष्ट नहीं होती एक जगह जमती चली जाती है और वही जमकर अब कैलास बन गई है। कवि ने उसकी चिकनी चमकती बर्फ़ीली दीवार को देवियों-परियों का दरपन भी कहा है।

और पूरब दूर, नेपाल के उत्तर बाज़ू में हटकर हिमालय का सबसे ऊंचा शिखर है, एवरेस्ट, गौरीशंकर चोटी के पास ही २६००२ फुट ऊंचा, जिस पर किसी जीवधारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ने अब तक कभी पैर न रखा था। पर वाह रे आदमी का पौरुख कि तूने उसे भी सर कर लिया। भारत के तेनसिंह और न्यूज़ीलैंड के हिलेरी ने भारत और न्यूज़ीलैंड का झंडा एक दिन उस पर गाड़ दिया !

हिमालय की परबत-माला लगातार आसाम तक चली गई है। वहां उससे बर्मा की पहाड़ियां भी आ मिलती हैं। हिमालय की ढाल से होकर जो नदियां नीचे मैदान में बह जाती हैं, उनकी धाराओं से वहां एक जाल-सा बन गया है। देश का अन्न उन्हीं की लाई मिट्टी में उपजता है। उन्हीं की राह पहले हमारा व्यापार चला, उन्हीं के तीर हमारे नगर खड़े हुए। हमने उन्हें अपने देवी-देवताओं के बीच पधराया, उन्हें पूजा। हमारा खाना-पहनना सब उन्हीं पर अवलंबित है।

हिमालय की महिमा बड़ी है। परबत वैसे भी अपनी ऊंचाई से हमें छोटा कर देता है, फिर यह तो संसार का सब से ऊंचा पहाड़ है। हमारे ऋषि-मुनियों ने उसकी कन्दराओं में और बनों में निवास किया है, तप तपा है। हमारे पाण्डवों ने संसार जीतकर उसी हिमालय की जात्रा की। उसकी सुन्दरता से वे इतने खिंचे कि फिर लौटे नहीं, वहीं गल गये। अपने देश की गरिमा का सबसे महान् रूप यही हिमाचल है। उसे सौ-सौ प्रणाम !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२

पंजाब की सीमा अब अमृतसर है, सिक्खों का पवित्र नगर जहाँ उनके गुरुओं ने जन-जन में भाईचारे का प्रचार किया, फिर अत्याचारियों से लड़ने के लिये साधुओं की सेना तैयार की। उसके आसपास ही रावी के दोनों तट वे क्षुद्रक और मालव रहते थे, वीर खेतिहर। उन्होंने राजा अपने बीच नहीं होने दिया, अपने पंचायती राज का ही साका चलाया। इन्हीं मालवों ने सिकन्दर के छक्के छुड़ा दिये थे। सिकन्दर रो-रो मरा था।

व्यास नदी के दोनों ओर द्वाब है। दोनों ओर कभी आय आ बसे थे। सतलज और जमुना के बीच सरस्वती और दृषद्वती की धारायें बहती हैं। सरस्वती की धार आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पानीपत करनाल के फैले रेगिस्तान की रेत में खो जाती हैं। कभी उसके तीर बड़ी चहल-पहल थी। होम-जग्यों से उसके तीर की चप्पा-चप्पा भूमि भरी थी। उसी के नाम से हमारे पूर्वजों ने सरस्वती को ज्ञान की देवी माना। उसका हमारे पूर्वजों पर इतना उपकार था, उससे इनका इतना नेह था कि जब वे पूरब गंगा-जमुना के संगम पर आ बसे और वहां अपने जग्यों की उन्होंने धूम मचा दी, तब दो ही नदियों के संगम को त्रिवेणी कहा, तीसरी नदी अपनी प्यारी सरस्वती को माना। पर चूंकि वह जाहिर न थी उसे वह अन्तःसलिला कहने लगे, ऐसी सरस्वती जो धरती के नीचे बहती है। कुरुक्षेत्र का फैला प्रसिद्ध मैदान वहीं है जहां महाभारत की लड़ाई लड़ी गई थी। वहीं भगवान कृष्ण ने अर्जुन के मोह का भंजन करते हुए गीता के कर्म-मार्ग का उपदेश किया था। वहीं सरस्वती के तीर मरते-कटते कौरव-पाण्डव भाइयों से विरक्त हो बलराम आ बसे थे।

पृथ्वीराज चौहान

पास ही पानीपत का मैदान है, तलावड़ी का भी जहाँ भारत की अनेक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खूनी लड़ाइयाँ लड़ी गई थीं तलावड़ी में तो पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को पहले अपने लोहे का पानी पिलाया पर अपनी ऐयाशी और भोग-विलास से दोस्तों को दुश्मन बनाकर उसने दूसरी बार मैदान खो दिया और सरस्वती की धारा में ही उसकी जीवन-नौका डूब गई।

थोड़ी ही दूर पर वह ऐतिहासिक मैदान है जहाँ बाबर ने पहली बार दिल्ली के इतने पास मोर्चाबन्दी की थी, तोपों को जहां पहली बार उसने दागा था, पहली बार बारूद का इस्तेमाल किया था, आतिशबाजी से इब्राहिम लोधी के हाथी भड़का दिये थे। फिर उसी मैदान में दो ही पीढ़ी बाद हेमू ने उसके पोते अकबर और उसके सरपरस्त बैरम से मुग़लों की सल्तनत छीन लेने की कोशिश की थी। उसी मैदान में अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच जुझाऊ संग्राम हुआ था, और हिन्दुस्तान का इतिहास बदल गया था। बड़ी महिमा है उस मैदान की।

पास ही दिल्ली है, महाभारत के दिनों में जिसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। जमुना के किनारे खड़ी आज भी वह इठला रही है। आठ-आठ बार वह गिरी और उठी है। सदा उसके स्वामी बदलते गये हैं, सदा उसने अपना कलेवर बदल दिया है। उसके भोगने वाले मर गये पर उसका वैभव न चुका। पृथ्वीराज और बलवन, अलाउद्दीन और मुहम्मद तुगलक,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बाबर और अकबर, शाहजहां और औरंगज़ेब—एक के बाद एक आये और चले गये। दिल्ली का सुहाग सदा बना रहा।

उस दिल्ली में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की सभ्यता सिरजी। उसकी आगे की मंज़िलें सरकीं। कुतुब और किला, जामा मस्जिद और मकबरे दोनों के हुनर के सबूत हैं। दोनों ने मिलकर वहीं मुग़ल कलम के चित्र बनाये, चित्र कि दुनिया के चितेरों को हैरत में डाल दें। दोनों ने मिलकर वह उर्दू संवारी जिसकी सफ़ाई और सादगी ज़बान की सुईकारी है।

यह आगरा है जमुना के ही किनारे। ग्वालियर के राजा ने यहीं कोहनूर हुमायूं को दे दिया था, अपने परिवार की रक्षा के बदले। फिर वह स्वयं चित्तौड़ जा पहुंचा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस कोहनूर हीरे की कहानी अद्भुत है। अनमोल हीरा है यह। संसार के रोज़ाना ख़र्च का आधा इसकी तब कीमत आंकी गई थी। आज यह अनेक बादशाहों के पास होता इंग्लैंड की रानी के ताज में आ लगा है।

अकबर ने इसी आगरे में अपना किला बनवाया। यहीं उसके नवरतन बिकरमाजीत के नवरतनों की तरह जगमगाते थे। यहीं हिन्दू-मुसलमानों को आपसी मेल-मुहब्बत का पाठ पहले-पहल पढ़ाया गया था। यहीं संसार की सबसे अनमोल, सबसे सुन्दर आलीशान इमारत ताजमहल है, दुनिया के महलों में अनूठा।

पास ही वह फ़तेहपुर सीकरी है जहां एक बार भारत की किस्मत का फ़ैसला हुआ था, जहां की हवा आज भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजपूतों की टूटी सांसों से भरी है, जहां की जमीन देशभक्ति के रक्त से आज भी गीली है। आसमान उनके बलिदान से सन्नाटे में है। बाबर की पल-पल दगती तोपों की बाढ़ में साँगा के राजपूत घुड़सवार अपने को झोंकते चले गये थे।

राणा साँगा

एक कतार बढ़ी, टूट गई, दूसरी बढ़ी, टूट गई, फिर तीसरी, फिर चौथी, और फिर बेशुमार कतारें, एक के बाद एक। दुनिया ने ऐसी जुझाऊ लड़ाई न देखी थी। और उन राजपूतों का सरदार वह मेवाड़ का राजा साँगा था जिसके बस एक बाँह थी, एक टाँग और जिस्म पर जिसके अस्सी घाव थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महलों का जंगल है यह सीकरी। संसार के कुछ अत्यन्त सुन्दर महल वहाँ बने हैं। अकबर के कलावन्तों ने कला की सुघराई इन इमारतों पर, उनके खंभों-कंगूरों पर, बुर्जियों-

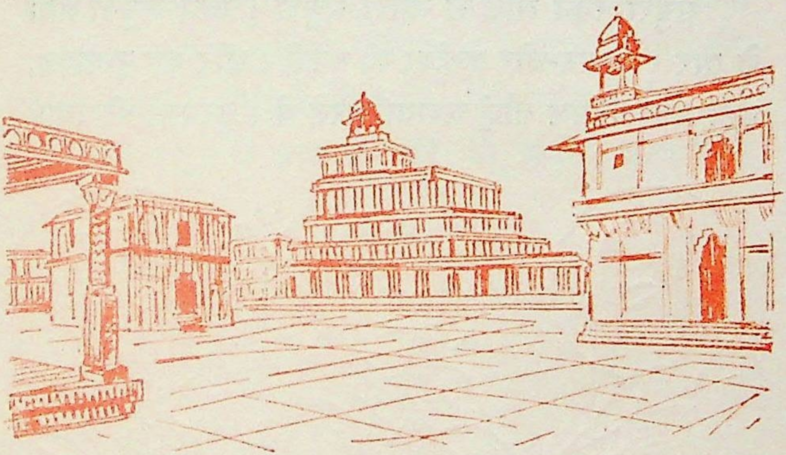

दीवारों पर बिखेर दी है। हुनरमन्द चितेरों ने वहां एक से एक मनोहर चित्र लिखे हैं। अकबर वहीं सभी धर्मों के पंडितों की बहसें सुना करता था। वहीं उसने अपने नये धर्म दीने-इलाही की नींव डाली जिसमें सारे धर्मों की अच्छाइयों का निचोड़ था।

पर आज वह सीकरी उजाड़ है, सूनी। पानी न मिलने के कारण अकबर को उसे छोड़ देना पड़ा था। अब वह समूचा नगर अपने सैकड़ों महलों के साथ सूना खड़ा है, जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी के शाप से वह निराधार हो गया है, बुलन्द दरवाजे के पीछे बन्दा और उस दरवाजे से ऊंचा दुनिया में कोई दूसरा दरवाजा नहीं।

मथुरा, तीन लोक से न्यारी मथुरा। उसी जमुना मैया के तीर। माखन-चोर कन्हैया की नगरी। और वह वृन्दावन, जहां बाल-गोपाल गौएं चराया करते थे। सूरदास-मीराबाई

सूर मीरा तुलसी

का वृन्दावन। गोकुल, नंदगांव बरसाना, जहां की धूल में भगवान् के चरणों की छाप है, जहां की गायें कृष्ण के नाम पर रंभाती हैं, जहां की मायें अपने लालों में नंदलाल के सपने देखती हैं।

और वहीं कृष्ण एक दिन कंस को मार मथुरा जीतकर भी जरासन्ध से समर में भाग दूर पच्छिम चले गए थे। इसी से उनका नाम ही रणछोड़ लाल पड़ा था। चक्रधारी क्या

19730

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रणछोड़ था ? अरे जिसने बिना लड़े, बिना अस्त्र धारण किए केवल बुद्धि से महाभारत जीत ली वह क्या रणछोड़ हो सकता था ? वह तो उसकी महिमा थी, पच्छिमी सागर के तीर द्वारका बसानी थी, चला गया। और जो न जाता तो भला हमारा साहित्य कैसे पुरता ? श्रीमद्भागवत कैसे लिखा जाता ? गोपियों की करुणा कैसे उमड़ती ?

उसी मथुरा में आज से कोई दो हजार साल पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुषाणों ने राज किया, तब वहाँ कला की एक से एक मूरतें बनीं। गुहों के समय की बुद्ध-मूरतें तो अपना सानी नहीं रखतीं।

गंगा की घाटी, जिसमें जमुना, सरजू, गंडक भी बहती हैं, देश की बखार है, अन्नराशि से भरा खलिहान। मेरठ-देहरादून से आसाम तक। बीच में एक रोड़ा नहीं, पिसी

हुई मिट्टी है जिसमें बीज डालते ही अंकुर फूट आते हैं। राम-कृष्ण की भूमि है यह, वाल्मीकि-व्यास की, अशोक-विक्रमादित्य की, शेरशाह-अकबर की। राजनीति और दर्शन में, ज्ञान और विज्ञान में, कला और साहित्य में, धर्म और प्रेम में इसी मध्यदेश के नेताओं ने देश को राह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिखाई। चीनी यात्री हुएन-त्सांग ने लिखा है कि यहां के रहने वाले देवताओं की बानी बोलते हैं। बोलते हैं तो उनके होठों से अमृत झरता है, मधु बरसता है। उनकी बोली समूचे देश में प्रमाण मानी जाती है। जो वे बोलते हैं वह सही है, जो वे तज देते हैं वह गलत है। शिष्टता के वे स्वरूप हैं, मरजाद के धनी।

सारे उत्तर भारत के प्रधान नगर इसी गंगा-जमुना की घाटी में हैं। मेरठ, प्राचीन काल का हस्तिनापुर, कन्नौज,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कौशाम्बी, प्रयाग, काशी, अयोध्या, पटना, गया और आज के व्यापार के केन्द्र कानपुर, आसनसोल, कलकत्ता भी। मध्य देश बड़ा वैभवशाली है।

जिला बरेली में रामनगर है, पुरानी अहिछत्रा, जहां पंचालों के राजा द्रुपद राज करते थे। पांडवों और कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य इसी राजा के गुरु-भाई थे, गजब के बाण चलाने वाले धनुर्धर। वहीं की पांडवों की रानी द्रौपदी थी, उसी राजा द्रुपद की बेटी जिसने अपने अपमान का बदला कौरवों का सर्वनाश कराकर लिया। और पूरब कम्पिला है, प्राचीन काम्पिल्य, पूरबी पंचाल की राजधानी। यह गंगा-जमुना के बीच का द्वाब (जिला फर्रुखाबाद) पंचाल कहलाता था। वहीं के राजा प्रवहण जैबलि ने उपनिषदों का ज्ञान खोजा था।

कन्नौज को कौन नहीं जानता। एक के बाद एक अनेक राजकुलों ने वहां राज किया। मौखरियों ने, हर्ष ने, आयुधों ने, प्रतिहारों ने, गहड़वालों ने। महमूद गजनी के हमले से पहले प्रतिहार गए, शहाबुद्दीन के हमले से फिर गहड़वाल। इन गहड़वालों में आखिरी जयचन्द था। उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ है, जो कहा जाता है कि उसने देश को दुश्मनों को सौंप दिया। पर सच तो यह है कि जहां पृथ्वीराज भागता हुआ सरस्वती के तीर पकड़कर मार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डाला गया था, यह अस्सी साल का जयचन्द अपने मुट्ठीभर जवानों के साथ दुश्मन से लड़ता हुआ खेत रहा ।

जमुना के तीर इलाहाबाद के जिले में कोसम गांव में दूर तक पुराने कोट की दीवारें और टूटे खण्डहर मिले हैं । महाभारत के बाद गंगा की बाढ़ से हस्तिनापुर के बह जाने पर इन्हीं खण्डहरों की जमीन पर अर्जुन के कुल के राजाओं ने अपनी राजधानी कौशाम्बी बसाई । वहां का राजा उदयन, बुद्ध के समय राज करता था । उसकी कथाएं बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिनों तक इस देश के गांवों में कही जाती रहीं।

गंगा-जमुना का संगम तीरथराज कहलाता है। सरस्वती के तीर से जब आर्य लोग पूरब की ओर बढ़े तब उन्होंने यहीं प्रयाग में डेरा डाला था। उनके होम-जग्यों के कारण ही यहां का नाम प्रयाग पड़ा। अब उसे इलाहाबाद कहते हैं। यहीं जमुना, दिल्ली, आगरा, मथुरा और कौशाम्बी के ऐतिहासिक और पवित्र रज लाकर गंगा में डाल देती है और गंगा उसे लिए मन्दगति से सागर पहुंच उसे सौंप देती है। बड़ी महिमा है प्रयाग की, उस रज की और गंगा की धारा की।

जिस काशी में स्नान के लिए सारा देश दौड़ता है वह प्रयाग से कुछ ज्यादा दूर नहीं है, थोड़ा ही पूरब है। शंकर

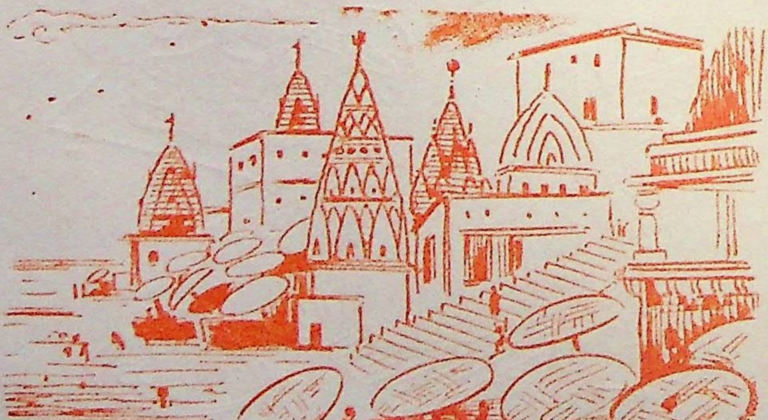

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की पुरी है यह पावन नगरी, बाबा विश्वनाथ की। गंगा की धारा यहां घूम गई है और नगरी पानी तक बसती चली गई है। बड़ी छटा है यहां गंगा और उसकी इस पवित्र नगरी की। एक से एक महात्मा, एक से एक पंडित यहां आए और ज्ञान की गंगा में नहाकर तृप्त हो गए। यहीं राजा अजातशत्रु ने जनक विदेह की तरह उपनिषद् का ज्ञान उचारा, यहीं जैनों के आदि गुरु सुपार्श्व ने जैन धर्म का ज्ञान विचारा, इसके पास ही सारनाथ में भगवान् बुद्ध ने पहली बार अपना उपदेश किया, यहीं स्वामी शंकराचार्य को मण्डन मिश्र की पत्नी ने शास्त्रार्थ में हरा दिया था। सारनाथ में अशोक ने अपनी लाट खड़ी की थी। उस लाट के मस्तक पर जो सिंह बने थे, वही आज हमारी राष्ट्रीय सरकार की मुहर बन गए हैं।

उत्तर की ओर सरजू की घाटी है। सरजू का जल भी बड़ा पावन है। राम की अयोध्या इसी के तीर है। इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की धारा में राम ने कभी स्नान किया था, इसी की धारा में अन्त में वे समा गए थे। बाद में अवध की राजधानी गोंडा और बहराइच जिलों की सरहद पर सावत्थी बनी, जिसके खंडहर सहट-महट गांव में आज भी मिट्टी के नीचे दबे हैं। बुद्ध ने अनेक बार वहां बरसात के चतुर्मास बिताए थे।

अवध की हाल की राजधानी लखनऊ थी, जैसे आज भी वह उत्तर प्रदेश की है। नवाबों ने उसे महलों और बगीचों से भर दिया था। वहीं के दरबार में मुगलों का चलाया हमारा राष्ट्रीय लिबास कुर्त्ता, अचकन, पाजामा अपने आनबान से सजा। अपार दौलत थी उनकी बेगमों के पास जो फैजाबाद में रहती थीं और जिन्हें अंग्रेजों ने बेआबरू करके कंगाल कर दिया था।

भगवान् बुद्ध

उत्तर-पूरब नैपाल की तराई में कभी वह कपिलवस्तु बसा था, जहाँ साक्यों का पंचायती राज था। भगवान् बुद्ध इन्हीं साक्यों में जन्मे थे। इनके पास ही दखिन-पूरब अनेक पंचायती राज थे—

Sri Pratap Singh Library Srinagar
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

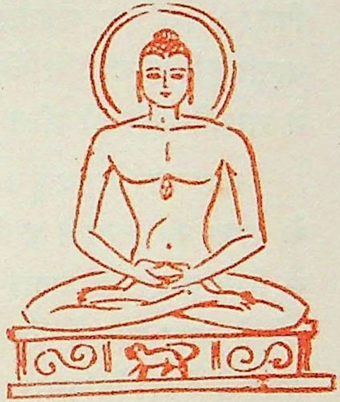
भगवान् महावीर

कोलियों के, मोरियों के, मल्लों के। और पूरब इन्हीं पंचायती राजों का सिलसिला बिहार में मुजफ्फरपुर तक चला गया था। मल्लों के ही बीच कसिया में भगवान् बुद्ध ने अपना शरीर छोड़ा था, थोड़ी दूर पर पावा में जैनों के महात्मा महावीर ने।

मुजफ़्फ़रपुर के बसाढ़ गांव में वैशाली के खंडहर हैं, जहां की वेश्या अम्बपाली ने बुद्ध की सेवा में वहां के राजाओं को लजा दिया था। वहाँ लिच्छवियों, वज्जियों, विदेहों आदि का मिलाजुला बुद्ध के जमाने में प्रबल पंचायती राज था। इसी वैशाली के महात्मा महावीर थे। पास ही वह मिथिला है जहाँ की जगज्जननी सीता थी, राजा जनक की बेटी। यहीं बाद में जनक विदेह हुए जिन्होंने उपनिषदों का ज्ञान विचारा। उपनिषदों के अनेक ऋषि उन्हीं के दरबार में रहते थे। याज्ञवल्क्य मुनि वहीं रहते थे। वह दरबार ज्ञान का अखाड़ा बन गया था। ज्ञानी गार्गी ने वहीं याज्ञवल्क्य को एक बार ललकारा था। वहाँ के राजकुल को उखाड़कर जनता ने बाद में अपना पंचायती राज कायम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया। पर इन पंचायती राजों को मगध साम्राज्य की बढ़ती हुई सीमाओं ने पीछे लील लिया, जैसे कोसल (अवध) ने साक्यों-मल्लों को लील लिया।

गंगा पार मगध है। उसी की पुरानी राजधानी गिरिव्रज के राजा जरासन्ध ने अपने दामाद कंस के बध के बाद बदले के लिये कृष्ण पर चढ़ाई की थी। कृष्ण तब द्वारका चले गये थे और बाद में भीम से उसे मरवा डाला था। बुद्ध के समय के राजा बिंबिसार ने उस राजधानी से बाहर राजगृह में अपनी नई राजधानी बनाई। इसके परकोटे आज भी राजगिर के पहाड़ों पर दूर तक दौड़ते चले गए हैं। फिर उदायी ने गंगा और सोन के किनारे प्रसिद्ध पाटलिपुत्र बसा-कर वहीं मगध की नई राजधानी कायम की। धीरे-धीरे मगध सारे भारत का स्वामी बन गया। सिकन्दर की सेना ने इसी मगध के डर से व्यास नदी के किनारे हथियार डाल दिये थे। फिर इसी से राजा चन्द्रगुप्त ने यूनानी राजा सेल्यूकस से जीतकर काबुल तक मगध की सीमा बढ़ा ली थी। संसार में भाईचारे का पहला प्रचार करने वाला, युद्ध का विरोधी, शान्ति का प्रचारक राजा अशोक इसी चन्द्रगुप्त का पोता था। उसने वैर का बदला दोस्ती से चुकाया, बदी का नेकी से और जिन यूनानी राजाओं के पूर्वजों ने भारत पर हमले किये थे, उनके राज में उसने दवायें बंटवाईं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आदमियों और जानवरों के लिये उसने अस्पताल बनवा दिये। उसी पाटलिपुत्र में मनु ने अपना धर्मशास्त्र लिखा, पाणिनी-पतंजलि ने अपना व्याकरण, चाणक्य ने कूटनीति भरा अपना अर्थशास्त्र और वहीं सिक्खों के गुरु गोविन्दसिंह जनमे। वही पाटलिपुत्र आज पटना है।

उसी मगध में राजगिर की पहाड़ियों के पीछे गया के पास वह गांव था, उरुबेला, जहां पीपल के नीचे भगवान् बुद्ध ने अपना ज्ञान पाया था। वहीं उस ज्ञान के दर्शन हुए थे, जिसका बुद्ध के चेलों ने सारे एशिया में, चीन, तिब्बत, मंगोलिया में, जापान, कोरिया में, बर्मा, स्याम, अनाम में, जावा, सुमात्रा, बाली में, लंका में प्रचार किया था। आज भी वह गया इसी ज्ञान के कारण बोधगया कहा जाता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जहां भारत के सारे हिन्दू अपने पितरों का श्राद्ध करने हर साल जाते हैं।

राजगिर के पास ही नालन्दा का वह गांव है, जहां ज्ञान गुना जाता था, जहां संसार का सबसे बड़ा विश्व-विद्यालय था। वहां संसार के दूर-दूर के देशों से आकर दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे और सौ पंडित एक साथ उन्हें पढ़ाते थे।

उसी बिहार में सासाराम में वह किसान सरदार शेर-शाह हुआ, जिसने भोजपुरियों की हरावल बनाकर दिल्ली जीत ली और राजनीति में किसानी राज कायम किया। उसी ने अकबर को टोडरमल दिया, आज का रुपया दिया, पैमाइश की जंजीर दी, डाक दिया, सड़कें दीं। उसकी बनवाई सड़क पटने से पेशावर तक चली गई थी। आज वही सड़क ग्रांड ट्रंक रोड कहलाती है, जिस पर उत्तर प्रदेश और पंजाब के बड़े-बड़े नगर खड़े हैं।

आगे बंगाल है; जिसकी राजधानी कलकत्ता है, भारत का सबसे बड़ा नगर। पूरब देस बंगाला का डर पच्छिम की नारियों को बराबर लगा रहता था। उसे वे जादू-टोने का देश मानती थीं। आज भी उनके गानों में पतियों को साव-धान किया जाता है कि उस पूरब के देश मत चले जाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वरना बंगालिन जादूगरनी होती है, मतिमार लेगी, मेढ़ा बना लेगी।

जितना ही पूरब जाइये जादू का यह डर बढ़ता जाता है। उस जादू का गढ़ आसाम माना जाता था, ब्रह्मपुत्र के तीर बसे गौहाटी का कौरू-कमच्छा का मन्दिर। गौहाटी को पुराने ज़माने में प्राग्ज्योतिष कहते थे। कितना सुन्दर नाम है यह! यानी कि जहां प्रकाश की किरन पहले फूटे, सूरज पहले निकले, विहान पहले हो। पूरब प्रकाश की दिशा है, पच्छिम सूर्यास्त की, प्रकाश के डूबे जाने की, अंधकार की।

गंगा की यह घाटी हिमालय के आंचल से बंगाल की खाड़ी तक खेतों से हरी-भरी है। जिन्दगी वहां पेंग मारती है, सूखे का नाम नहीं है। इसी से तो यहीं नदियों के किनारे पवित्र से पवित्र तीरथ बने, बड़े से बड़े राज खड़े हुए, गहन से गहन ज्ञान गुने गये, शान्ति के सन्देश दिये गये। धन्य है इस मध्यप्रदेश की मिट्टी।

दिल्ली के पच्छिम पंजाब से मालवा और गुजरात तक फैला राजस्थान है, रेगिस्तान का अटूट मैदान। दिलेरी की शान रहा है यह राजस्थान, सूरमा राजपूतों का गढ़। आन को निभाना इस मरुभूमि के किसानों के लिये स्वाभाविक बात हो गई थी। आन पर मर मिटने वालों की गिनती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वहां नहीं की जा सकी। भारत की बहादुरी वहां गढ़ बनाकर बस गई थी। साहस और बहादुरी का जौहर राजस्थान के इतिहास में कोई देखे। राजस्थान की इंच-इंच जमीन बलिदानों के रक्त से गीली है, उसके कन-कन से शहीदों की आवाज आती है। वहां की हवा वीर राजपूतों की हुंकार से गूंजती है, दिशाओं में वहाँ की नारियों का गौरव नहीं समा पाता। राजस्थान में गङ्गा नहीं, जमुना नहीं, सुनहरे खेत नहीं, बस चमकती रेत है। पर तलवार का धनी राजपूत वहीं रहता है, वहीं उसकी राजपूतनी लोहे की धार चूमने वाली औलाद जानती है। हम उसकी तलवार की, उसके दूध की सौगन्ध खाते हैं।

दिल्ली-आगरे की सल्तनतों की लाज इस राजस्थान के राजपूतों ने रखी है। पहले उन्होंने उसके झंडे उठाए, फिर अर्थी उठाई। अम्बर के कछवाहों ने, जोधपुर-बीकानेर के राठौड़ों ने, बूंदी के हाडाओं ने। सांभर-अजमेर के चौहानों ने तो दिल्ली एक बार छीन भी ली थी, अजमेर के उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बीसलदेव ने जिसके पोते पृथ्वीराज ने दिल्ली से लाहौर तक राज किया था, जिसने नर्मदा के जंगलों में हाथियों का शिकार किया था, सरहिन्द के मैदानों में दुश्मनों का। काश कि उसने ऐश का पल्ला न पकड़ा होता।

राजपूतों की तलवार दकन में चमकी, काबुल-बदखशां में, बलख़बुखारा में, फ़रगना में। उनके हवा की तेजी से उड़ते हुए रिसाले नदियाँ-पहाड़ लाँघ गए, तोपों की दगती बाढ़ों के मुंह अपने खुले सीनों से बन्द कर दिए। बाबर ने अपने रोजनामचे में लिखा—तुर्कों का तुलुगमा देखा, उजबकों के हमले झेले, पठानों के मोर्चे, पर इन राजपूतों के तेवर कि मौत को काठ मार जाय, इनके रिसालों की रवानी से जमीन हिल जाय।

राजपुताने की चप्पा-चप्पा ज़मीन इतिहास की तीरथ है। कीरत की कहानी। उसको न शारदा बखान सके, न गणेश लिख सकें, न व्यास गुन सकें। वह राजपूतनी थी, जोधपुर के राठौड़ों की रानी जिसने धर्मात के मैदान से, सिप्रा के तीर से भागे अपने पति राजा जसवन्तसिंह के सामने किले के द्वार बन्द करा दिए थे, जो दुर्गादास की तलवार की छाया में अपने बच्चे अजित को लिए काबुल से जोधपुर की सरहद तक औरंगज़ेब की कुमक चीरती चली गई थी। वह राजपूत था जो, बूंदी का छत्रसाल, जिसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शाहजहां और जहांनारा से किये अपने कौल के लिये, दारा के राज के लिये औरंगजेब और मुराद की दकनी सेनाओं के बीच सामूगढ़ के मैदान से उन शाहज़ादों के गिर्द बर्छों की कनात खड़ी कर दी थी। जिसकी राजपूती चोटों से भागती हुई सेनाओं के बीच मुराद ने भाई से कहा था—भाईजान! भागो इस दीवाने हाड़ा के सामने से। पर जिसके तेवर से तमककर औरंगजेब ने अपने हाथी के पैरों में जंजीरें डलवा दी थीं। कहा था—सामूगढ़ का मैदान करबला होगा। और राजपूतों ने वहीं कुरबान होकर हसन-हुसैन की मरजाद जीती थी।

जोधपुर की पुरानी राजधानी मन्दौर थी, गुर्जर-प्रतीहारों का मन्दौर, जिन्होंने कभी एक ओर गुजरात का धावा किया था, दूसरी ओर मालवा का, तीसरी ओर कन्नोज का। एक ओर जिन्होंने पालों से मोरचा लिया था, दूसरी ओर राष्ट्रकूटों से, और अन्त में जो पाटलिपुत्र से भागी लक्ष्मी के नगर कन्नौज में अपना झंडा गाड़ा था, प्रयाग और काशी में जिन्होंने अपने अश्वमेध किये थे, अपने बिरुद गवाये थे।

दखिन-पच्छिम वह अजमेर है, अरावली का कोट, जिसकी आड़ से अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब ने सालों मेवाड़ पर चोटें की थीं, जो सदियों मेवाड़ के अधीन रहा था। उसी के पास आबू है जहां के हवन-कुंड से राजपूतों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri

अग्निकुल जनमे थे—चौहान, परमार, परिहार—जहाँ वीरों की जात बदल कर क्षत्रिय कर दी गई थी।

पास ही दिलवाड़ा के जैन-मन्दिर हैं, महान् मन्दिर, संगमरमर के बने गगन-चुम्बी। उनके एक-एक खंभे पर सौ-सौ कटाव हैं, चांदनी में हजार-हजार छेनी के करतब, जो चितेरा देखे तो दांतों तले उंगली दबा ले। कभी वह सिरोही

के राज में थे। सिरोही की तलवार ने भी कभी लहू से अपना सुजस लिखा था, गुजरात से दिल्ली और दिल्ली से गुजरात जाने वाली सेनाओं की राह रोकी थी।

पूरब-दिल्ली की राह में—पुराने अम्बर का बगलगीर जयपुर है, कोटा-बूँदी से कुछ उत्तर, अपने यक सौ मकानों का सिलसिला लिये, पहाड़ों के गिर्द के बीच, उनके भी थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

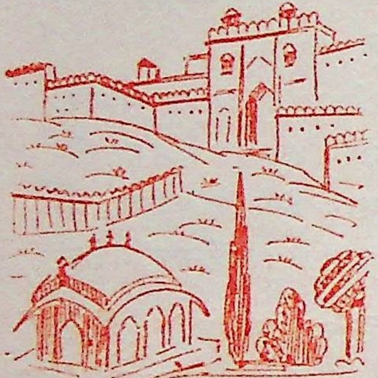

जयसिंह की कीरत उचारता, सूरज-चांद की गति नापने वाला अपना मान-मन्दिर लिये। कोटा-बूंदी के राज मेवाड़ की राह में पड़ते थे। दोनों एक ही राजकुल के थे,मेवाड़ के हाडावत जिन्होंने सदियों राणा की हरावल संभाली थी।

अजमेर से एक राह मालवा को चली जाती है, जहां की जमीन सोना उगलती है, रातें अमृत बरसाती हैं। उसी राह में एक मंजिल है, स्वर्ग से भी कमनीय, काशी-प्रयाग से भी पावन, गंगा-जमुना की धारा से भी पवित्र, सती के प्रेम से भी गरिम, चित्तौड़। मेवाड़ के भाल का तिलक, वीरता की सौगन्ध, देश-प्रेम का ध्रुवतारा, जौहर की ज्वाला।

मेवाड़ जोधपुर-बीकानेर की तरह रेतीला नहीं है, मालवा का जैसे एक टुकड़ा है, हरा-भरा, खेतों का खलिहान। अरावली के पहाड़ों का सिलसिला जहां-तहां टूटता चला गया है, घने वनों से ढका, जहां शेर चट्टान से चट्टान कूदते फिरते हैं, और जहां इनसे भी खूंख्वार, इनसे भी साहसी नर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डोलता है, आन का धनी सीसोदिया।

गुहिल, बापारावल, कुंभा, खुमान, हम्मीर, सांगा और प्रताप की जमीन है वह, उन्हीं की कौल-सी अडिग, उन्हीं की याद से मुखरित। और उसी मेवाड़ की अकेली पहाड़ी पर, उसकी चोटी का कंगूरा बना वह चित्तौड़ है, जिसपर हजारहों चोटें की गईं पर जिसने अपना सिर न झुकाया, गो जो मिट गया।

तीन-तीन बार उसे मिटा दिया गया, तीन-तीन बार चित्तौड़ उठ खड़ा हुआ, और आज उसकी टूटी दीवारें उसके टूटे कलस-कंगूरे जैसे पुकार-पुकार कहते हैं—झुक जाओ, आने वालो, यह चित्तौड़ है, सांगा और प्रताप की नगरी, मीरा और कृष्णकुमारी की नगरी, चूडावतों-सक्तावतों की नगरी।

प्राचीन काल में नगरी ही नाम भी था उसका माध्यमिक, जिसकी बगल से मगध पर चोट करने वाली हूणों और म्लेच्छों की सेनायें गुजरी थीं। तब चित्तौड़ वहां न था, सूनी पहाड़ी थी, उस पर दहाड़ने वाले शेर थे। काश कि चित्तौड़ तब भी रहा होता! और तब हूणों की सेनायें यशोधर्मा से टकराने मालवा न पहुंच पातीं, अजमेर की राह मेवाड़ पहुंचते-पहुंचते ही सर हो जातीं।

अलाउद्दीन की सेनाओं ने जब चित्तौड़ को घेरा, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके राजा भीमसिंह को धोखे से क़ैद कर लिया, तब चित्तौड़ ने पहली बार अपने को मिटा देने का बीड़ा उठाया। पद्मिनी ने हजारों राजपूतनियों के साथ जिस चिता में प्रवेश किया,

उसकी राख ऋषि-मुनियों के मंत्रों से कहीं अधिक पवित्र थी, हिमालय से कहीं अधिक ऊंची। दूसरी बार अकबर के घेरे में कसता हुआ भी चित्तौड़ ने कुछ वे बलिदान किये जिनका साका आज भी चलता है। जगमल के रक्त से जो चट्टान वहां आज लाल है, उस मेंड़तिया वीर की कहानी कभी सोने के अक्षरों में लिखी जायगी। उसी लड़ाई में कैलवा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कावह, चूड़ावत, वीर पत्ता जूझा था, जिसकी अमर-कहानी मेवाड़ के चारणों को उतनी ही प्रिय है जितनी अकबर की सेना के लिए वह अचरज बन गई थी। और सोलह बरस के अपने उस बेटे की मां उससे भी कहीं बढ़कर सूरमा निकली। उसे लगा कि कहीं बालक भागकर उसका दूध न लजा दे। इससे उसने स्वयं कवच पहना और अपनी बहु, पत्ता की पत्नी को कवच पहनाया और केसरिया पहने बेटे की टुकड़ी सेना के वह आगे चली। तीनों जूझ गये—मां भी, पत्नी भी, केलवा का वह चूड़ावत बालक पत्ता भी। इन दोनों लड़ाइयों के बीच चित्तौड़ को मिटा देने वाली वह लड़ाई लड़ी गई थी जिसमें गुजरात और मालवा दोनों की सेनायें शामिल थीं। मेवाड़ की रानी ने तभी हुमायूं को राखी भेजी थी और हुमायूं भी बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और आगरा डांकता राजपूताने की रेत उड़ाता मेवाड़ पहुंच गया था। पर तब तक चित्तौड़ की दीवारें अपने पहाड़ी आधार में खो चुकी थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चित्तौड़ के खंडहरों के बीच वह जो ऊंची लाट है, आसमान चूमता, खंभा, उसे राजा कुम्भा ने खड़ा किया था, गुजरात और मालवा के सुल्तानों को एक साथ हराकर उसी अपनी जीत की यादगार में। राणा सांगा ने अपने

उसी दादा की कीरत और उजागर की, जब दिल्ली के लोधी और पंजाब के राजाओं को धूल चटाकर उसने मालवा से पंजाब और गुजरात से कालपी तक उस काल का सबसे बड़ा साम्राज्य खड़ा किया।

पर मेवाड़ की महिमा, चित्तौड़ की बुलन्दी, उनके कुंभा और सांगा की तलवार से नहीं रची गई, न यादगार की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लाटों और महलों के कलश-कंगूरों से। वह बुलन्दी प्रताप के त्याग के आधार पर खड़ी हुई, जिसके बलिदानों से मेवाड़ की हवा भरी है, जिसकी बरदाश्त के सबूत घने जंगलों के पेड़ों में गड़े वे कील-कांटे हैं, जिनपर प्रताप के बच्चों के पालने झूलते थे और जिसकी रूखी बनी हुई रसोई, पांच-पांच बार उठा देनी पड़ी थी, उसे खाने का मौका दुश्मनों ने न दिया था। मेवाड़ की उस वीरता और त्याग का प्रतीक वह प्रताप है, जिसने चौथाई सदी तक इन्सान की आजादी के कलमे पढ़े और देश के दुश्मनों को सिर न झुकाया।

महाराणा प्रताप

३

और पच्छिम, काठियावाड़ तक फैला गुजरात है। उससे भी पच्छिम समुन्दर से लगा काठियावाड़ है, जिसके पच्छिम तट पर द्वारिका है, भारत की आखिरी पुरी जहां मथुरा तजकर कृष्ण ने शरण ली थी, जिसने उसे बसाया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

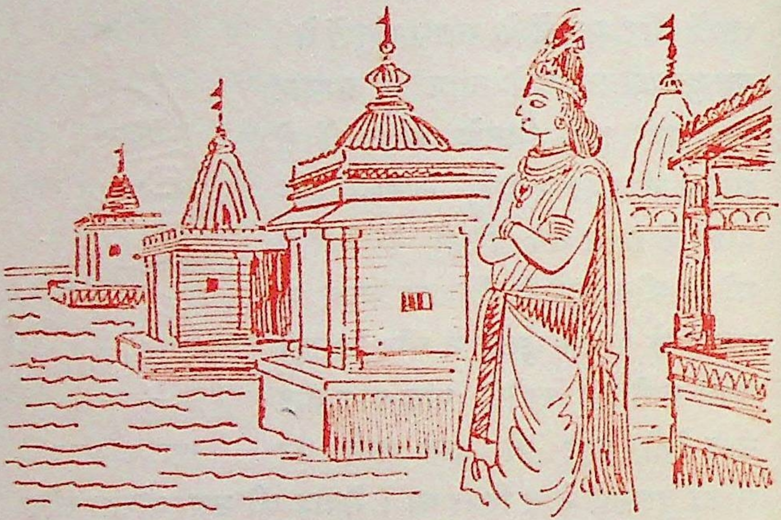

वहीं कृष्ण के मित्र ऊधो ने ब्रज की यात्रा की थी, जहां कि गोपियों के सुख-सिंगार कन्हाई के प्रवास से बिसर गये थे। पर क्या ऊधो के उस संवाद, से गोपियों के मन की उदासी कट सकी ? हमारे समूचे साहित्य पर उस उदासी की छाप पड़ती चली गई। सुदामा के खूंट के चावल उसी द्वारका के द्वार पर नंगे पांव दौड़कर विश्वम्भर कृष्ण ने खोलकर खाये थे, उसी द्वारका में जहां हजारों बरस तक पच्छिमी देशों से आने वाले जहाज धन बरसाते रहे थे।

काठियावाड़ ने हमें दयानन्द और गांधी दिये। दयानन्द ने अन्धकार पर प्रकाश की दुन्दुभी बजाई, पाखंडों का भंडाभोड़ किया। गांधी ने हमारा जन्मसिद्ध अधिकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वराज्य हमें दिलाया । आज की राष्ट्रीय चेतना, उस देश का सोते से जाग उठना सब उसी महात्मा की रहनुमाई का नतीजा है । दयानन्द और गांधी दोनों के विचार काठियावाड़ और गुजरात को लांघ गये । गांधी की विचार-धारा ने तो संसार भर को प्रभावित किया । दोनों की ज़बान गुजराती थी पर दोनों ने हिन्दी का महत्व समझा और उसी को राष्ट्र-वाणी के रूप में नमस्कार किया ।

महातमा गांधी

गुजरात और काठियावाड़ पच्छिमी व्यापार की मंडी बने । पच्छिमी सागर तीर पर उतरने वाला माल गुजरात से ही होकर दिल्ली, आगरे और मालवा जाता था । नर्मदा और ताप्ती नदियों की लाई मिट्टी से गुजरात के खेत अन्नों की राशि पैदा करते हैं । उसके पूरब की जमीन काली मिट्टी से ढकी है । उसमें कपास लहलहाती है । उसी की रूई ने कभी इंग्लैंड के कपड़े के कारखानों को चालू रखा था, अब उनसे बड़ौदा, अहमदाबाद और बम्बई के पुतलीघर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कपड़ों के कारखाने चलते हैं।

उसी गुजरात की भूमि पर पहले-पहल यूरोप के विदेशियों ने, अंग्रेजों, डचों और पुर्तगालियों ने, डेरा डाला।

अपनी कोठियां और आढ़तें बनाईं। सूरत में अंग्रेजों ने अपनी मंडियां और कारखाने खड़े किये। सूरत ठेठ गुजरात है। कहते हैं, जिसने सूरत के मूरत न देखे उसने क्या देखा? दिल्ली के बादशाह मध्यप्रदेश पर कब्जा कर लेने के बाद पहले गुजरात और मालवा पर ही अधिकार कर लेना पसन्द करते थे। गुजरात के जरिये देश-विदेश का व्यापार हाथ आ जाता था, मालवा के ज़रिये देश का खलिहान।

बहुत प्राचीन काल से गुजरात और काठियावाड़ महत्व के प्रान्त माने जाते थे। क्योंकि उसी राह अधिकतर विदेशी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमले हुए। बाख्त्री के यवन, सिन्ध-सुण्ध के शक, चीन के हूण, उत्तर-पच्छिम के गूजर और अहीर अधिकतर उसी राह देश में आये। गुजरात का नाम ही विदेशी गूजरों के नाम पर पड़ा। पर देशी-विदेशी क्या, कौन-सी धारा इस देश में आई, जिसे हमने अपने समुन्दर में पचा न लिया? आज गूजर भी हम हैं, अहीर भी हम हैं, शक भी हैं, यवन भी हैं। उनका रक्त हमारी नसों में बहता है, उनकी भाषा हमारी ज़बान पर बोलती है, उनकी रहन-सहन हमारे व्यवहार में शामिल है, उनकी कला हमारी कला की काया में एकपन, एक प्राण होकर बसी है। वह पारस क्या जो कि धातु को छुए और सोना न कर दे। हम पारस थे, जिसे-जिसे हमने परसा, उसे-उसे सोना कर लिया।

गुजरात कला की भूमि है, शिल्प की, चित्रों की। यहां के मन्दिर एक से एक विशाल, एक से एक सुन्दर हैं। अहमदाबाद के मन्दिरों के खम्भे जैसे नज़ाकत के नमूने हैं और वहां की मस्जिदें तो जैसे हिन्दू-मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोनों ने राष्ट्रीय इज्जत मानकर खड़े किये हैं। दकन को छोड़कर देश का कोई प्रान्त नहीं जहां हिन्दू-मुसलमान दोनों की अक्ल का इमारत बनाने में एक साथ इतना इस्तेमाल हुआ हो, जितना इस गुजरात में हुआ। वहां के मन्दिरों में लकड़ी का काम भी न्यारा ही सुन्दर हुआ है।

गुजरात और काठियावाड़ के चित्र प्राचीन और सुन्दर हैं। जैनों के निमन्त्रण-पत्रों पर, पोथियों में गुजराती कलम के चित्र बनते थे और उन्होंने प्रसिद्ध राजस्थानी कलम को भी प्रभावित किया। उनके बादशाहों ने मालवा, दकन, अवध और जौनपुर के सुल्तानों की ही तरह हमारी इमारतों, चित्रों और संगीत की रक्षा की, उन्हें भरा पुरा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४

मध्यभारत, उत्तरभारत या मध्यदेश और दकन के बीच है रीवा–खजुराहो से ग्वालियर, भोपाल, मालवा तक। कला की दृष्टि से यह प्रदेश बड़ा धनी है। खजुराहो के मन्दिर तो देश में अनूठे माने जाते हैं। उनके रूप, आकार, उनकी मूर्तियां और बनावट अपने तरह की आप हैं।

झांसी कानूनी इन्तज़ाम से उत्तर प्रदेश में पड़ती है, पर है उसका अधिक सम्बन्ध ग्वालियर और मध्यभारत से। वैसे भी उसका मेलजोल बुन्देलों और चन्देलों से रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाना फरनवीस

रानी लक्ष्मीबाई

तांत्या टोपे

है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने तो पिछले दिनों में आज़ादी की लड़ाई ही लड़ी थी और सन् सत्तावन में उसने देश से अंग्रेजों के पैर उखाड़ दिये थे। लड़ते-लड़ते उसने प्राण दिये।

तानसेन

ग्वालियर भारत की संगीत-कला की राजधानी है। कहते हैं कि बैजू बावरा भी कुछ काल वहां रहा था। पर तानसेन तो वहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का रहने वाला ही था। कछवाहा राजपूतों का वह गढ़ था। उसका किला अजेय माना जाता था। आज भी उसकी इमारतें पुरानी शैली का नमूना हैं। ग्वालियर के राज में ही बाघ की प्रसिद्ध गुफायें हैं, जहां अजन्ता के चित्रों की तरह ही सुन्दर दीवार-चित्र बने हैं, कि देखते ही बनता है।

इसी ग्वालियर में पदमपवायां है जहां के नाग राजाओं ने कुषाणों से तलवार छीन उन्हें देश से बाहर निकाल राष्ट्रीय झंडा खड़ा किया था, जिससे गुप्तकाल का सुनहरा जुग हमारे सामने आया। नाग शिव के भक्त थे और अपनी पीठपर शिवलिंग धारन करते थे। जब-जब वे विदेशी राजाओं को हराते थे, तब-तब काशी में वे अश्वमेध करते थे। वहां गंगा के तीर उन्होंने दस अश्वमेध किये। इससे वहां के दशाश्वमेध घाट का यह नाम ही पड़ गया। मिर्जापुर और मालवा के बीच के ब्राह्मण राजा वाकाटक ग्वालियर के पड़ोसी थे।

मालवा की काली मिट्टी ग्वालियर की पथरीली भूमि का जवाब है, उससे लगी हुई है। इतनी उपजाऊ जमीन शायद दुनिया में कहीं नहीं। आब-हवा बड़ी खुशनुमा है, सांझें बड़ी सुखद हैं, चांदनी रातें मनोहर। पहले इसका अवन्ती नाम था, फिर पंजाब के मालवों ने यहां बस कर इसे अपना नाम दिया। शकों ने भी यहां राज किया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कालिदास

शकराजा रूद्रदामा ने वहीं संस्कृत के गद्य को निखारा। उज्जैनी प्राचीन काल से अवन्ती और मालवा की राजधानी थी। ज्योतिष का केन्द्र भी वही थी, व्यापार की मण्डी भी। बिकरमाजीत के नवरतन वहीं थे, संस्कृत का महान् कवि कालिदास वहीं रहता था। वहीं के राजा यशोधर्मा ने हूणों को परास्त किया था। बाद में पठानों का उस पर कब्जा हुआ और रूपमती और बाज बहादुर का प्रेम वहीं पला। दोनों कवि थे, दोनों गवैये। आज भी मालवा में घर-घर उनकी कहानी कही जाती है।

राजा मुंज और भोज ने मालवा को जस दिया। उनके दान से देश के पंडित और कवि अघा गये। भोज ने अपनी राजधानी उज्जैन से हटाकर धारा नगरी में रखी। यहां उसका संस्कृत कालेज देश-विख्यात हो गया था। पास ही मांडू के नवाबों ने भी मांडू को सरोवरों से भर दिया। धारा के बाद मांडू ही पठानों की राजधानी बनी। बाज-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहादुर वहीं का था। मांडू उजड़ गया पर उज्जैन आज भी सिप्रा के तीर महाकाल शिव की छाया में जग रहा है।

भोपाल के नवाबों ने अपने इलाके को महलों और झीलों से भर दिया। पहाड़ों और जंगलों से समूचे मध्य-भारत को प्रकृति ने सजाया है, पर भोपाल की सुघराई तो कहते नहीं बनती। इसी के पास भिलसा है, प्राचीन विदिशा जहां के हाथीदांत के कारीगरों ने सांची के स्तूप का घेरा तैयार किया था। यह भाग पुरानी इमारतों से भरापुरा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

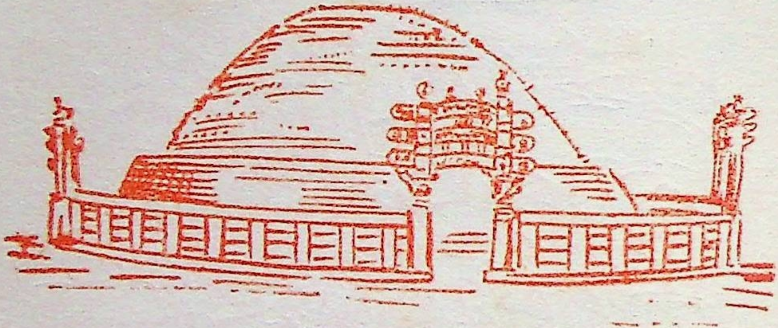

सांची और भरहुत के स्तूप तो आज से सवा दो हज़ार साल पुराने अशोक के समय के ही बने हैं। उनकी रेलिंगों पर मूरतों की एक दुनिया खड़ी है। लगता है पत्थर जी उठा है, कलावन्त विधाता बन गया है। मध्यभारत कला का आकर है।

५

भारत की यह भूमि कला की जननी है। यह कहते कि यह प्रान्त कला का आकर है, कुछ झिझक होती है। कारन कि देश की इंच-इंच जमीन कला के नमूनों से ढकी है। कौन-सी मिट्टी है भला जहाँ एक से एक हृदयहारी मूरतें नहीं दबी हैं? कौन-सी जगह है जहाँ भारत के कलावन्तों ने अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कला नहीं साधी ? बंगाल-मद्रास-मध्यभारत से लगे स्वयं उड़ीसा का वैभव कला के विचार से कुछ कम नहीं, बहुत बड़ा है।

उड़ीसा के जंगल हमेशा से अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध रहे हैं। हुमायूं ने एक बार उन जङ्गलों में हाथियों के शिकार में महीनों लगा दिये थे। आज भी वहां घने जङ्गलों की कमी नहीं है। महानदी और सुवर्णरेखा की घाटियां धान की अनन्त सम्पदा उपजाती हैं। पर वही जब चढ़ चलती हैं, तब उड़ीसा की नीची भूमि जैसे समुन्दर से ढक

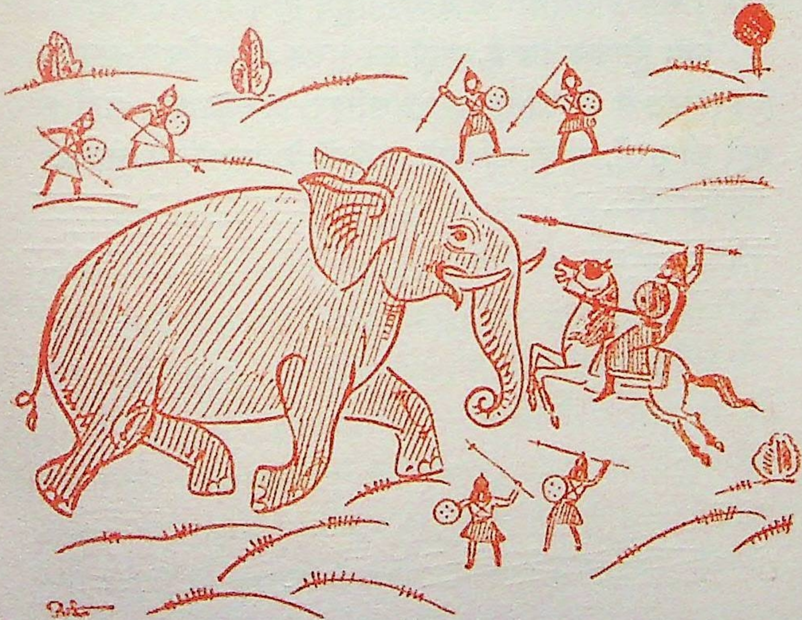

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

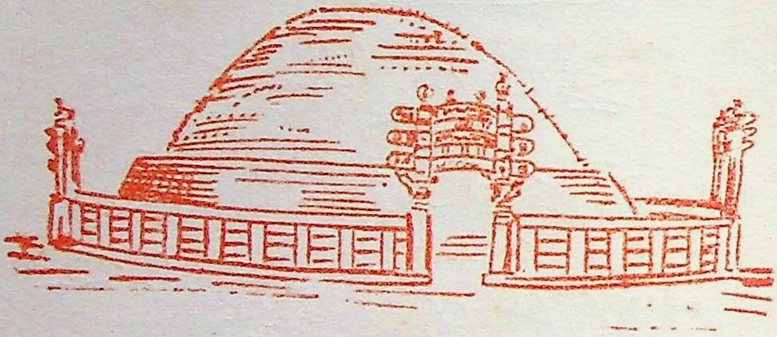

सांची और भरहुत के स्तूप तो आज से सवा दो हज़ार साल पुराने अशोक के समय के ही बने हैं। उनकी रेलिंगों पर मूरतों की एक दुनिया खड़ी है। लगता है पत्थर जी उठा है, कलावन्त विधाता बन गया है। मध्यभारत कला का आकर है।

५

भारत की यह भूमि कला की जननी है। यह कहते कि यह प्रान्त कला का आकर है, कुछ झिझक होती है। कारन कि देश की इंच-इंच जमीन कला के नमूनों से ढकी है। कौन-सी मिट्टी है भला जहाँ एक से एक हृदयहारी मूरतें नहीं दबी हैं? कौन-सी जगह है जहाँ भारत के कलावन्तों ने अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कला नहीं साधी ? बंगाल-मद्रास-मध्यभारत से लगे स्वयं उड़ीसा का वैभव कला के विचार से कुछ कम नहीं, बहुत बड़ा है।

उड़ीसा के जंगल हमेशा से अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध रहे हैं। हुमायूं ने एक बार उन जङ्गलों में हाथियों के शिकार में महीनों लगा दिये थे। आज भी वहां घने जङ्गलों की कमी नहीं है। महानदी और सुवर्णरेखा की घाटियां धान की अनन्त सम्पदा उपजाती हैं। पर वही जब चढ़ चलती हैं, तब उड़ीसा की नीची भूमि जैसे समुन्दर से ढक

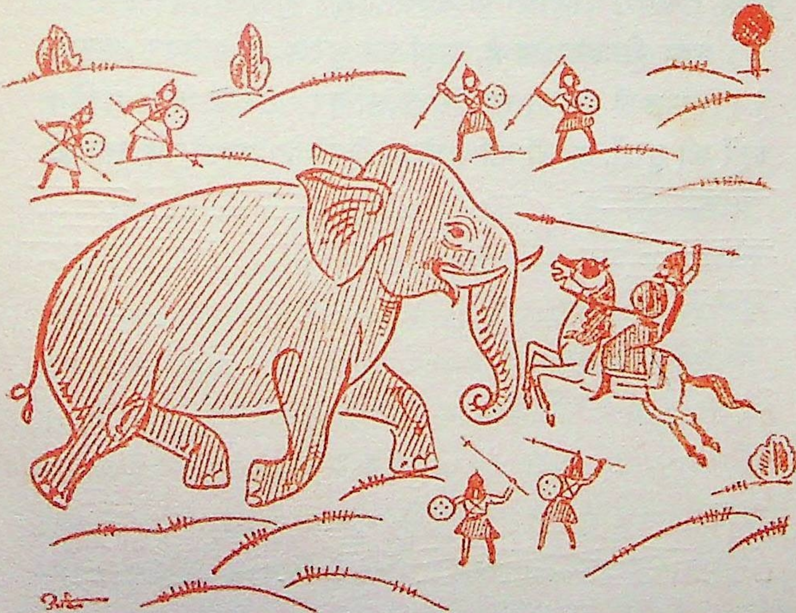

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाती है। सुवर्णरेखा की रेत से पहले काफ़ी सोना निकाला जाता था। आज भी अनेक लोगों की रोज़ी रेत से सोना निकाल कर ही चलती है।

कटक, भुवनेश्वर, पुरी और बालासोर उड़ीसा के प्रधान नगर हैं। प्राचीन नगर भुवनेश्वर में उड़ीसा सरकार की नई राजधानी बन रही है। भुवनेश्वर मन्दिरों का नगर है, अधिकतर शिव के मन्दिरों का। इतने खूबसूरत मन्दिर इस देश में कम हैं, विशाल और खूबसूरत अपनी दीवारों पर मूरतों की दुनिया उठाये, जीती-जागती, हँसती-खेलती मूरतें। कसरी राजाओं के बनवाये हुए हैं ये मन्दिर।

पास ही कनारक है, जहां का सूरज का मन्दिर अनूठा है। भारत में उसका-सा दूसरा मन्दिर सूरज का नहीं। ग्रहों की मूरतें, घोड़ों की तेजी, पहियों के चक्कों की बनावट

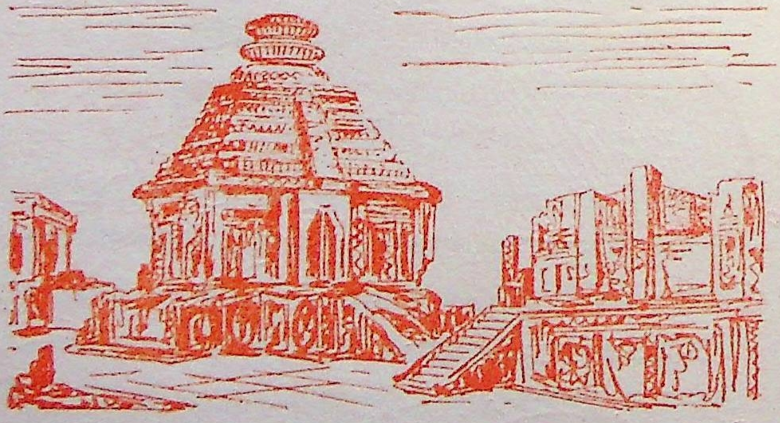

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब जैसे सांचे में ढाल दी गई हैं। आदमी देखकर हैरत में आ जाता है। मन्दिर कभी पूरा नहीं हो सका था, अधबना ही रह गया था। पर आज जो बच रहा है, वह टूटा हुआ होकर भी आदमी की बुद्धि और पौरुख का अनूठा सबूत है।

जंगलों में, पहाड़ों में कटी खंडगिरि और हाथी गुफा की गुफायें हैं। दो हजार साल से अधिक हुए जब वे ठोस पहाड़ को काटकर बनाई गई थीं। उनकी मूर्तियां भी बड़ी सुन्दर हैं। हाथी-गुफा में तभी के राजा खारवेल का एक शिलालेख है, जिससे पता चलता है कि उसने दो-दो बार मगध पर चढ़ाई करके उसे मजबूर कर दिया था और एक बार तो उसके डर से पामीरों का यूनानी राजा दिमित (डेमिट्रियस) पाटलिपुत्र छोड़कर भाग गया था।

पुरी का नगर भी प्राचीन है और वह भी काशी, उज्जैन, द्वारका, कांची, मथुरा, हरद्वार के साथ भारत की सात पवित्र नगरियों में गिनी जाती है। वह भारत का सब से पूरबी शहर है जैसे द्वारका सबसे पच्छिमी। देश को हमारे महात्माओं ने चारों दिशाओं के तीर्थों से कस दिया है। उत्तर में हिमालय में बद्रीनाथ है, दखिन में समुद्र के किनारे रामेश्वरम। पच्छिम में द्वारका है जैसे पूरब में यह पुरी। पुरी की पुराणों में बड़ी महिमा गाई गई है। कारन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि वहीं जगन्नाथ का मन्दिर है। अयोध्या में जैसे राम की महिमा है, मथुरा-द्वारका में कृष्ण की, काशी में शिव की वैसे ही पुरी में जगन्नाथ की महिमा है। जगन्नाथ बुद्ध के स्वरूप हैं। बुद्ध ने सभी मानवों को समान माना था, आदमी-आदमी में भेदभाव नहीं किया था। हिन्दुओं की जांतपांत पर गहरी चोट की थी। इसी से जगन्नाथ के मन्दिर के भीतर भी जांतपांत का भेदभाव नहीं है। ब्राह्मण और भंगी मन्दिर के आंगन में एक ही पांत में खा सकते हैं, खाते हैं। कोई छुआछूत नहीं मानता।

पुरी का सागर-तीर बड़ा सुन्दर है। बालू का मैदान दूर तक चला गया है, जिस पर सदा नीले समुन्दर की फेनिल लहरें टूटती रहती हैं, सीपी, संख, कौड़ियां बिखेरती रहती हैं। पास ही नारियलों और ताड़ों का घना जंगल है, जिससे सागर तट श्यामल हो जाता है। इस तट पर कभी दूर के पूरब-पच्छिम के विदेशों से जहाज आया करते थे। अब वह तीर का जल छिछला है और बस मछली मारने के काम आया करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६

दखिन, उड़ीसा से लगा आंध्र देश है जो अभी हाल तक मद्रास का अंग माना जाता था जैसे उड़ीसा बिहार का। उससे भी दखिन मद्रास है, कुमारी अन्तरीप और रामेश्वरम तक। आंध्र लोग ज्यादातर गोदावरी और कृष्णा नदियों की घाटियों में रहते हैं। इन्हीं घाटियों में कभी आंध्रों का साम्राज्य फैला हुआ था, सागर से सागर तक। प्रायः समूचा दकन तक उनके राजा सिमुक ने उत्तर भारत के मगध पर अधिकार कर लिया था। उनके राजाओं के अनेक लेख गोदावरी तीर के नासिक की गुफाओं में आज भी पढ़े जा सकते हैं। उनका बल शकों और महाराष्ट्र के अहीरों ने तोड़ दिया। उनके साम्राज्य के कुछ भाग पर विजयनगर का साम्राज्य पीछे खड़ा हुआ।

आंध्र देश से ही लगा हुआ दकन है, जिसमें हैदराबाद भी शामिल है। दकन मध्यभारत के दखिन में है, नर्मदा-ताप्ती के दखिन। विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ों के सिलसिले देश को उत्तर-दखिन के दो बड़े भागों में बाँट देते हैं। विन्ध्याचल को भी हमारे पुरखों ने सजीव माना था। पुराणों में लिखा है कि अगस्त्यमुनि दखिन पधारे। पर दखिन जाना पहले कुछ आसान न था, क्योंकि विन्ध्याचल दिन-दिन ऊंचा बढ़ता ही जाता था। वह अगस्त्य मुनि का शिष्य था, इससे जब वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसको ओर निकले तब उसने प्रणाम करने के लिए मस्तक झुकाया। इस पर मुनि ने कहा कि जब तक हम वापस लौट न आयें तब तक ऐसे ही पड़े रहो। अगस्त्य फिर लौटे ही नहीं और विन्ध्याचल वैसे ही साष्टांग पड़ा हुआ है।

दक्न की ज़मीन अधिकतर पथरीली है और उसके पूरब-पच्छिम दोनों ओर पूरबी और पच्छिमी घाट के सिल-सिले दखिन समुन्दर तक चले गये हैं। इसी के पच्छिमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाग में सह्याद्रि की पहाड़ियों में अजन्ता और एलोरा की गुफायें हैं। अजन्ता की गुफाओं में अधिकतर दीवारों पर बने चित्र हैं, एलोरा की गुफाओं में अधिकतर मूरतें हैं। अजन्ता की गुफाओं में कभी बौद्ध साधु रहते थे। उन्हीं के उपदेश के लिये उनमें उनके धर्म की गजब की सुन्दर तस्वीरें बनी हैं। एलोरा का कैलास मन्दिर शिव का है, बड़ा विशाल बना हुआ है। ठोस पहाड़ तीस लाख हाथ काटकर यह मन्दिर बनाया गया है।

दकन के इलाके में इस प्रकार की गुफाओं की भरमार है। कार्ले, कन्हेरी, भाजा की गुफायें देश भर में अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। बम्बई के पास ही समुद्र में एलिफैंटा की गुफा है, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमूर्ति हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पूरब में महाराष्ट्र है, वीर मराठों का देश। इन मराठे किसानों को शिवाजी ने संगठित कर एक राष्ट्र बना दिया था। इनकी वीरता ने इनकी आज़ादी हरने वाले मुगलों के छक्के छुड़ा दिये थे। एक बार तो मराठे समूचे भारत से कर वसूलते थे और दिल्ली - लाहौर - राजस्थान पर भी उन्होंने अधिकार कर लिया था। पानीपत के मैदान में उनकी ताकत टूट गई। बम्बई भारत का सबसे बड़ा बन्दरगाह है, देश का कलकत्ते के बाद सबसे बड़ा नगर है, शायद सबसे धनी, मिलों-कारखानों का नगर। थोड़ी दूर पर पेशवों का नगर पूना है।

शवाजी

७

आंध्र देश और दकन के दखिन मद्रास का इलाका है, जो पूरबी किनारे से लगा कुमारी अन्तरीप तक चला गया है। वह तमिल भाषा बोलने वालों का देश है। उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दखिनी-पूरबी किनारे पर रामेश्वरम है, जहां धनुष कोटी के बन्दरगाह से रोज़ लंका के लिये जहाज़ जाते हैं, और कोलम्बो कुछ ही घंटों में पहुँच जाते हैं।

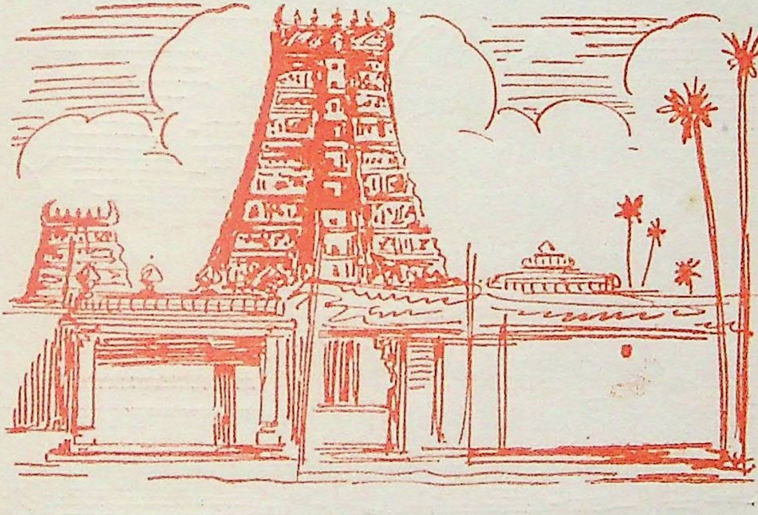

इस इलाके में पहाड़ काटकर बनाये, विशेषकर ईंट-पत्थर के, मन्दिरों की भरमार है। बड़े विशाल मन्दिर हैं ये। दखिन और उत्तर के मन्दिरों में बड़ा अन्तर है। दखिन के मन्दिरों के चारों ओर बड़े-बड़े आंगन और उनमें तालाब होते हैं। बाहरी दीवार में विशाल फाटक होते हैं जिन्हें गोपुरम कहते हैं। इस भाग पर पहले पांड्यों और पल्लवों का राज था। उन्होंने ही ये विशाल मन्दिर बनवाये थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तन्जोर का बृहदीश्वर शिव का मन्दिर भारत में बेजोड़ है। रामेश्वरम में भी अनेक मन्दिर हैं, पर वहां का महत्व वहां के खम्भों वाले एक दूर तक चले गये लम्बे बरामदे का है।

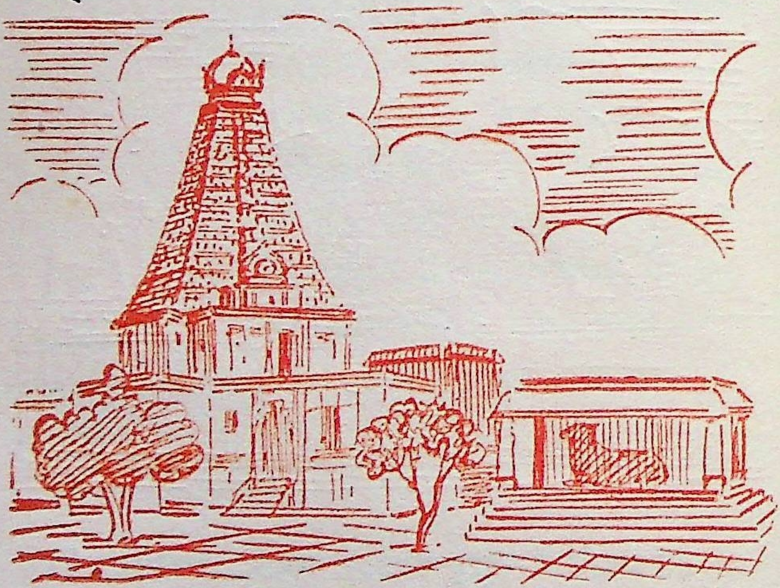

मैसूर पहले स्वतन्त्र रियासत था। वहां भी अनेक विशाल मन्दिर हैं। उसका अधिकतर भाग पहले विजयनगर के साम्राज्य में था। विजयनगर के महलों और मन्दिरों के खंडहर हैदराबाद के दखिनी भाग में हम्फी में आज भी खड़े हैं। मैसूर के हलाबिद और बेलूर के मन्दिरों की तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अचरज की इमारतों में गणना है ।

यह सारा दक्षिण अत्यन्त उपजाऊ है । कावेरी नदी की घाटी में धान खूब होता है । नदी से सिंचाई भी खूब होती है और उसका जल बांध-बांधकर रोक लिया गया है। मैसूर के टीपू सुल्तान की अंग्रेजों से खासी कशमकश चली थी । जीते जी उसने अपनी आजादी छीनने वालों से बैर जारी रखा। मैसूर के जंगलों में हाथियों के झुण्ड विचरते रहते हैं । उनके शिकारगाह भी वहां बने हुए हैं। कावेरी के मुहाने से मोती निकलते हैं । इन मोतियों की इटली के रोमनगर में बड़ी मांग थी, इनके बदले यूरोप से बड़ा सोना इस देश में आया करता था।

दखिन भारत का पच्छिमी भाग मालाबार कहलाता है। उसका प्राचीन नाम केरल है। प्राचीन साहित्य में केरलियों के रूप की बड़ी तारीफ़ की गई है। उनके केश तो अब भी अक्सर उनके खड़े होने पर भी भूमि पर लोटते हैं।

मालाबार में चन्दन के जंगल हैं और उन्हीं जंगलों में दारचीनी, काली मिर्च, लौंग, तेजपत्र आदि गरम मसाले भी होते हैं । साग में गरम मसाला खाना संसार को मालाबार ने ही सिखाया। यूरोप के साथ इसी गरम मसाले का मलाबार का कभी बड़ा व्यापार चलता था और एक बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो इसी मसाले ने उस महानगर रोम की मान-मर्यादा रखी। जब अलारिक ने पांचवीं सदी में रोम जीता तब उसके छुटकारे के बदले उसने रोम से तैंतीस मन गरम मसाले लिए थे। अगर कहीं रोम के बन्दरगाहों में गरम मसालों से भरे भारतीय जहाज़ न खड़े होते, अगर रोम की दुकानों में और वहां के निवासियों के चौकों में गरम मसाले न होते तो रोम के नर-नारी अलारिक की तलवार के घाट उतर गये होते। अनन्त सोना और रोमन दीनार यूरोप और मिस्र से इन मसालों के बदले हर साल भारत आते थे। मालाबार के तट पर ही पहले पहल भारत का पता लगाने वाले पुर्तगाली वासकोदागामा के जहाज कालीकट पर लगे।

मालाबार की दक्खिनी हवा की उत्तरी भारत के साहित्य में बड़ी चर्चा है। लोगों का विश्वास है कि प्रातःकाल की शीतल मन्द सुगंध वायु, मालाबार से ही चल कर उत्तर पहुंचती है और हमारे शरीर को परस कर उसकी थकान हर लेती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

८

यह अपना देश है, सोने का भारत। कितना सुन्दर है, अपना यह देश। इसी से तो अथर्ववेद के ऋषि ने इस भूमि की इतनी स्तुति की है। ऋगवेद में भी इसकी नदियों की बड़ी महिमा गाई गई है। पुराणों में तो इस देश का कोई स्थान नहीं जो तीरथ न बन गया हो। जिस देश के देवता तैंतीस करोड़ हों उसका कौन-सा स्थल भला उनकी परस से पवित्र हुए बिना रह सकता है? फिर जब हमारे पुरखों को, पहाड़ों, नदियों तक से इतना प्रेम था कि उन्होंने उन्हें भी देवता बना लिया तब हमारा इस भूमि से इतना स्नेह क्यों न हो?

इस देश की जनता बहुमुखी होती हुई भी समान है। इसके आदर्श समान हैं, राजनीति समान है, सभ्यता और संस्कृति समान हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध-महावीर की इस पावन भारत-वसुन्धरा की इस भूलोक पर अनन्त महिमा है। इसकी मिट्टी का एक-एक कन हज़ार-हज़ार राम-कृष्ण बुद्ध-महावीर से कहीं महान है। सच ही हमारे पूर्वजों ने कहा है—जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। वन्देमातरम्!

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

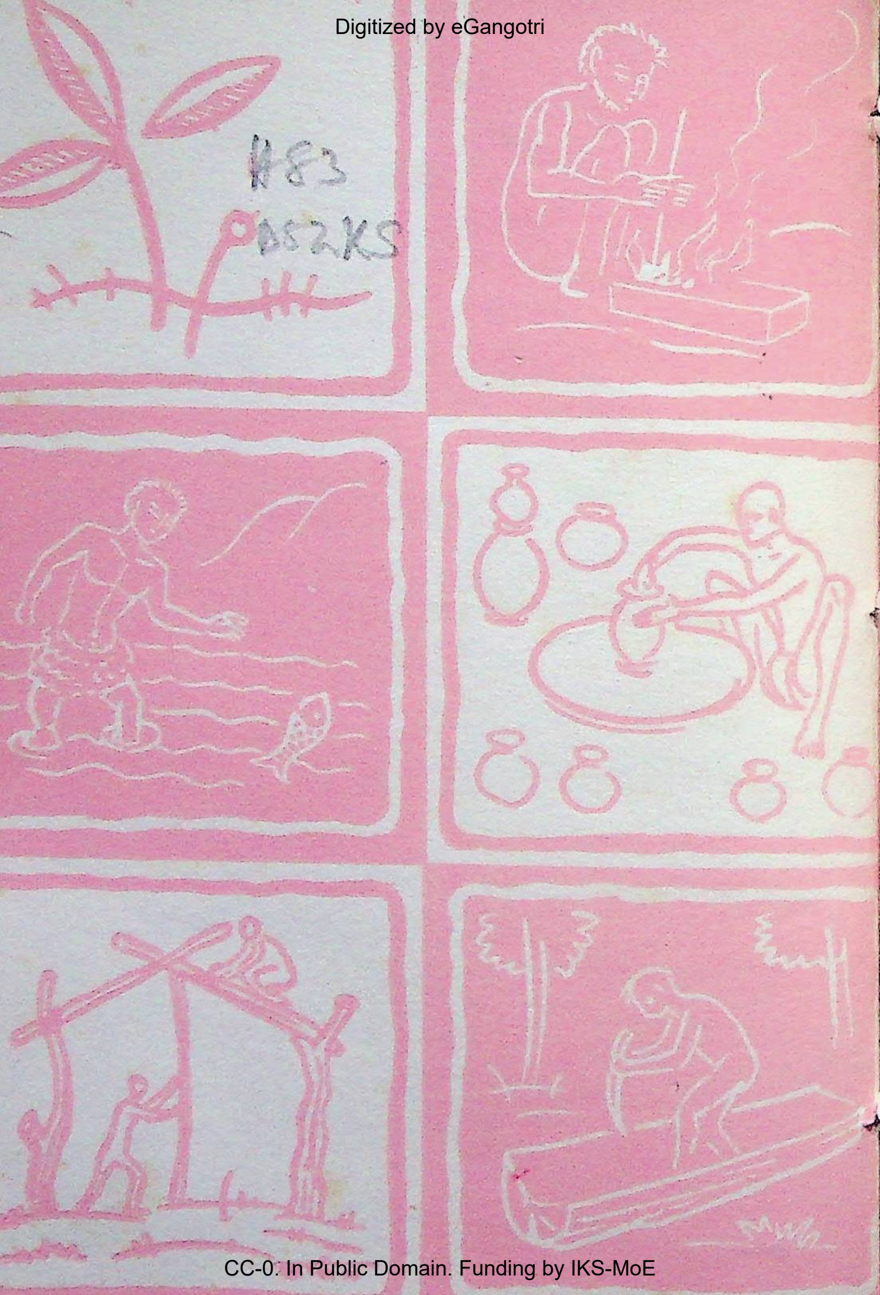

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE